खण्ड-5, अंक-1, वर्ष-2017, मु0पृ0 1-9, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9838

राजस्थान में जंगली मुर्गों का वितरणः एक अध्ययन

सतीश कुमार शर्मा
सहायक वन संरक्षक (सेवानिवृत्त)
पता– 14–15, चकरिया आम्बा, रामपुरा चौराहा
झाडोल रोड़, उदयपुर, पोस्ट ऑफिस नाई– 313001 राजस्थान, भारत
sksharma56@gmail.com

प्राप्त तिथि–30.04.2017, स्वीकृत तिथि–31.07.2017

सार– राजस्थान में मुर्गों की 4 प्रजातियाँ मोर, जंगली मुर्गा, झापटा एवं जंगली मुर्गी विद्यमान हैं। मोर राजस्थान के पश्चिमी किनारे को छोड़ कर लगभग सभी जगह पाया जाता है। जंगली मुर्गा एवं झापटा दक्षिणी एवं दक्षिण–मध्य अरावली में साथ–साथ पाये जाते हैं। जंगली मुर्गी राज्य के दक्षिण–पूर्वी भाग में विंध्याचल पर्वतमाला के वनों एवं उत्तरी अरावली के जंगलों में पाया जाता है। वर्तमान में इनकी संख्या व वितरण में उत्तरोत्तर कमी परिलक्षित हो रही है, फलस्वरूप समयोचित संरक्षण उपायों की आवश्यकता है।

बीज शब्द– राजस्थान, जंगली मुर्गे, वितरण।

Distribution of wild fowls in Rajasthan: a study

Satish Kumar Sharma
Assistant Conservator of Forests (Retd.)
Add.- 14-15, Chakariya Amba, Rampura Choraha
Jhadol Road, Udaipur, Post Office Nai– 313001, Rajasthan, India
sksharma56@gmail.com

Abstract- Four species of fowls namely, Blue Peafowl, Grey Junglefowl, Aravalli Red Spurfowl and Painted Spurfowl are found in Rajasthan. Except extreme western edge of the state, peafowl is distributed nearly in whole Rajasthan. Grey Junglefowl and Aravalli Red spurfowl are sympatric in distribution in southern and south-central Aravallis. Painted spurfowl is confined to forested areas of Vindhyas in south-eastern part of the state and in northern Aravallis. Currently their distribution is gradually deteriorating; therefore timely conservation practices are needed.

Key words- Rajasthan, wild fowls, distribution.

1. **प्रस्तावना**– क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। इस राज्य को दो असमान भागों में बाँटती हुई अरावली पर्वतमाला कुछ तिरछी दिशा में आर–पार विद्यमान है। अरावली पर्वतमाला उत्तरी गुजरात के साबरकांठा व बनासकांठा जिलों से प्रारम्भ होकर दक्षिण–पश्चिम एवं दक्षिणी राजस्थान में बाढ़मेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर एवं डूंगपुर जिलों में प्रवेश कर आगे बढती हुई मध्य राजस्थान में अजमेर व नागौर से होती हुई सीकर, झुन्झुनु एवं अलवर जिलों से होकर हरियाणा में महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुडगाँव एवं फरीदाबाद जिलों में छितराई पहाड़ियों के रूप में परिवर्तित होकर दिल्ली में जाकर समाप्त हो जाती है। अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में थार रेगिस्तान फैला हुआ है तो पूर्व दिशा में विंध्याचल पर्वतमाला एवं मैदानी क्षेत्र का फैलाव है। राज्य के दक्षिण–पूर्व जिलों को मालवा पठार छू रहा है।

अरावली पर्वतमाला के दक्षिणी भाग में मुख्यतया पतझड़ी वनों का फैलाव है। यहाँ माउन्ट आबू में ऊपरी शिखर पर अर्द्ध सदाबहार वन विद्यमान हैं। मध्य एवं उत्तरी अरावली में पतझडी एवं काँटेदार वन विद्यमान हैं। विंध्याचल पर्वतमाला व मालवा पठार पर भी पतझड़ी व काँटेदार वनों का फैलाव है। राज्य के पूर्वी भाग में, जिसे हाड़ौती क्षेत्र कहा जाता है, में चंबल एवं उसकी सहायक नदियों का वर्षपर्यन्त बहने वाला तंत्र विद्यमान है। इस क्षेत्र में विंध्याचल पर्वतमाला में जगह–जगह खोहें देखने को मिलती हैं।

मुर्गे गेलीफॉर्मिज गण के फेजियानिडी कुल के सदस्य हैं। इस कुल में तीन उपकुल फेजियानिनी, पर्डिसिनी तथा ओडोन्टोफोरिनी सम्मिलित हैं। फेजियानिडी में सभी फीजेन्ट, जंगली मुर्गे व मोर शामिल हैं। पुरानी दुनियाँ की बटेरें व तीतर उपकुल पर्डिसिनी में शामिल किये गये हैं। अमेरिकी बटेरें उपकुल *ओडोन्टोफोरिनी* में वर्गीकृत की गई हैं (सिंह एवं सिंह, 1995)। राजस्थान में फेजियानिडी उपकुल में चार प्रजातियाँ निम्नवत विद्यमान हैं–

सारिणी–1: राजस्थान में फेजियोनिडी उपकुल की ज्ञात पक्षी प्रजातियाँ

क्र.सं.	वैज्ञानिक नाम (सामान्य अंग्रेजी नाम के साथ)	स्थानीय नाम (एवं प्रचलन क्षेत्र जहाँ नाम प्रचलित हैं)
1.	*Pavo cristatus* (Blue Peafowl)	मयूर, मोर, (समस्त राज्य), धेल्डी (मादा पक्षी, दक्षिणी राजस्थान), मोरियो (मारवाड़), मोल्डी (मादा पक्षी, हरसोली, अलवर)
2.	*Gallus sonneratii* (Grey Junglefowl)	जंगली मुर्गा (दक्षिणी राजस्थान), कोमरी (आबू पर्वत क्षेत्र), उजाडी कूकड़ा (मेवाड़ क्षेत्र)
3.	*Galloperdix lunulata* (Painted Spurfowl)	जंगली मुर्गी
4.	*Galloperdix spadicea caurina* (Aravalli Red Spurfowl)	झापटा (भील बाहुल्य दक्षिण राजस्थान)

मुर्गे बहुत महत्वपूर्ण वन्य पक्षी हैं। हाल ही में ग्रे जंगल फाउल को राजस्थान सरकार ने सिरोही जिले का प्रतीक चिन्ह भी घोषित किया है। इससे स्पष्ट है राज्य सरकार इस पक्षी के संरक्षण में ध्यान दे रही है। प्रस्तुत पत्र में जंगली मुर्गा (*Gallus sonneratii*), जंगली मुर्गी (*Galloperdix lunulata*) तथा झापटा (*Galloperdix spadicea*) के राजस्थान में वितरण की स्थिति का विवरण प्रस्तुत है। मोर (*Pavo cristatus*) फेजियानिडी उपकुल का आम पक्षी है जो देश का राष्ट्रीय पक्षी भी है तथा संपूर्ण राजस्थान में (पश्चिमी छोर को छोड कर) पाया जाता है अतः इस पक्षी पर यहाँ ध्यान केन्द्रित नहीं किया गया है। शेष तीन जंगली मुर्गे राज्य में अल्पज्ञात प्रजातियाँ हैं (फोटो प्लेट 1) तथा मोर की तुलना में काफी छोटे क्षेत्र में वितरित हैं अतः तीनों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

2. **अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन काल–** तीनों जंगली मुर्गे पहाड़ी एवं वनाच्छादित आवास में रहना पसंद करते हैं अतः राज्य में आर–पार फैली अरावली पर्वतमाला का उदयपुर जिले से लेकर अलवर जिले तक सर्वे किया गया। अरावली के फैलाव वाले सभी जिलों खास कर संरक्षित क्षेत्रों एवं सघन वनों में भ्रमण किया गया। अरावली के पूर्व दिशा में विद्यमान विंध्याचल एवं मालवा पठार क्षेत्र के वनों का भी सर्वे किया गया। विंध्याचल क्षेत्र में खोहों एवं उनके खडे तटों, जिन्हें ''कराई'' कहते हैं, उन पर विशेष ध्यान दिया गया क्योंकि मुर्गों सहित कई पक्षी इस आवास में रहना पसंद करते हैं। अरावली क्षेत्र के पश्चिम में थार रेगिस्तान में जहाँ–जहाँ कुछ वनावरण उपलब्ध हैं या छितरी पहाडियाँ हैं, वहाँ भी सर्वे किया गया। यह अध्ययन 1986 से 2016 तक किया गया।

3. **अध्ययन विधि–** स्थानीय लोगों, खासकर आदिवासियों जिन्हें वन्यजीवों एवं उनके आवास संबंधी अच्छी समझ है, उनको भी सर्वे के दौरान साथ रखा गया तथा उनके परंपरागत ज्ञान का भी लाभ लिया गया। सभी जंगली मुर्गों की अपनी विशिष्ट आवाजें हैं। उनकी उपस्थिति को उनकी आवाज, पगमार्क, भूमि पर बनाई खरौंचों, गिरे हुये पंख, झाडियों के नीचे बैठने हेतु खरौंच कर बनाये अवतल गड्ढे आदि से भी पहचाना गया। जलस्रोतों के पास अदृष्य स्थल में बैठकर पानी पीने आते मुर्गों को देखा गया। कुछ स्थानों पर बाँस के विशाल बड़े टोकरे बना कर उनको उल्टा रखकर, उनमें छुपकर मुर्गे देखे गये। टोकरे की एक तरफ रखी छोटी खिड़की से बाहर का नजारा देखा गया। वन विभाग की वन्य प्राणि गणनायें एवं उपलब्ध वैज्ञानिक साहित्य का भी अध्ययन किया गया। पुराने रजवाड़ों के परिवारों, वारिसों, वन प्रबंधकों एवं शिकारियों से भी संपर्क कर जानकारियाँ संग्रह की गईं। सेवानिवृत्त पुराने वन कर्मियों से भी महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त की गई।

4. **परिणाम एवं विवेचन– रा**जस्थान के जंगली मुर्गों पर अग्रवाल(1978, 1979), अनाम(2010), अली एवं रिप्ले(1983), ओझा(1998), कुमार(1996), रणजीत सिंह(1999) रेड्डी(1994), सहगल(1970), सिंह एवं सिंह(1995), शंकर(1993), शंकर एवं साथी(1993), शर्मा(1996, 1998, 2007), तहसीन(1986, 1988, 2004), तहसीन एंव तहसीन(1990) एवं व्यास(2000) के अध्ययन का अवलोकन करने पर इन पक्षियों पर अच्छी जानकारी मिलती है लेकिन वितरण संबंधी पूर्ण ज्ञान अनुपलब्ध है। इसे प्रस्तुत अध्ययन में समाहित किया गया है। तीनों जातियों के मुर्गों की राजस्थान के विभिन्न जिलों के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में उपस्थिति को जाँचने हेतु उपलब्ध वैज्ञानिक साहित्य का अध्ययन किया गया एवं सर्वे के द्वारा प्राथमिक तथ्य संग्रहीत किये गये। वितरण संबंधी उपलब्ध सूचनाएं सारणी 2, 3, एवं 4 में प्रदर्शित की गई हैं।

ग्रे जंगल फाउल का वितरण– राजस्थान में इस प्रजाति की वितरण संबंधी सूचना सारिणी–2 में अंकित है।

सारिणी–2: ग्रे जंगल फाउल का राजस्थान में वितरण

क्र.सं.	जिला	स्थान	वर्तमान में उपस्थिति	संदर्भ
1.	उदयपुर	लादन वन क्षेत्र	उपस्थित	तहसीन एवं तहसीन (1990), शर्मा (2007)
		फुलवारी अभयारण्य, रामकुण्डा, तिनसारा, धरियावद, मानसी वाकल नदी के गुजरात सीमा तक किनारे, तोरना वन खण्ड	उपस्थित	शर्मा (2007), श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप, 2005)
		पई, डोडावली, देवास, कर्नावली, उभेश्वर (उबेश्वर), नाल मोखी, ओगना, साण्डोल की नाल, सूरजबारा (पडावली के पास), खैरवाडा, बेडावल (सलुम्बर के पास), कोडियात, मोरवानिया, पुराना श्रीनाथ (घसियार), कुण्डेश्वर, दडीसा, अगदा, पागा, वनक्षेत्र, जामुडिया (जामुनिया) की नाल, गोगुन्दा (मजार के पास), खैरवाडा, धरियावद	वर्ष 1960 तक उपस्थित, वर्तमान में अनुपस्थित	श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007)
		कलेर वन खण्ड	चूना बेरी क्षेत्र में 1990 तक प्रजाति विद्यमान थी, लेकिन वर्तमान में अनुपस्थित	श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005)
2.	उदयपुर, पाली, राजसमंद	कुंभलगढ़ अभयारण्य	उपस्थित	शर्मा (2007)
3.	पाली, राजसमंद, अजमेर	टॉडगढ–रावली अभयारण्य (कालीघाटी भीलबेरी व काबरदाता क्षेत्र में अधिक दिखते हैं)	उपस्थित	शर्मा (2007) एवं निजी प्रेक्षण
4.	सिरोही	माउन्ट आबू	उपस्थित	सिंह एवं सिंह (1995)
		अग्नेश्वर मंदिर (देलवाडा से 2 किमी. पश्चिम में)	उपस्थित	शर्मा (2007)
		रेवदर, नीमाज, रव्वा बड़वज वन क्षेत्र	1961 तक उपस्थित, वर्तमान में नहीं	डॉ. रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007)
		मोरस वन क्षेत्र	1970 तक उपस्थित, अब अनुपस्थित	डॉ. रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005)
5.	उदयपुर, चित्तौड़गढ़ एवं प्रतापगढ़	लव–कुश आश्रम, वाल्मिकी आश्रम (सीतामाता अभयारण्य)	उपस्थिति	शर्मा (2007), श्री.पी. सी. जैन उपवन संरक्षक (निजी वार्तालाप 2016), श्री मनोज पराशर उपवन संरक्षक (निजी वार्तालाप 2009)
6.	चितौडगढ़	बस्सी	1970 तक उपस्थित लेकिन अब अनुपस्थित	ठाकुर विजय सिंह राव (निजी वार्तालाप 2014), मेजर दुर्गा दास (निजी वार्तालाप 2016)
7.	बाँसवाड़ा	बाँसवाड़ा जिले के विभिन्न वन क्षेत्र	प्रजाति पहले विद्यमान थी, लेकिन अब अनुपस्थित	ओझा (1998), सहगल (1974), डॉ. दीपक द्विवेदी (निजी वार्तालाप 2015)

8.	डूंगरपुर	बीछीवाड़ा	1970 तक उपस्थित लेकिन अब अनुपस्थित	महारावल श्री समरसिंह (निजी वार्तालाप 2005)
9.	प्रतापगढ़	सीतामाता अभयारण्य के क्षेत्रों के अलावा अन्य वन क्षेत्र	1970 तक सभी जगह उपस्थित लेकिन अब केवल सीतामाता अभयारण्य में उपस्थित	श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007)
10.	राजसमंद	कटार, बरवाड़ा	1970 तक पश्चिमी ढाल के वनों में उपस्थित (पूर्वी ढाल में तत्समय नहीं थे)। वर्तमान में अनुपस्थित	श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007)

सारिणी–2 एवं चित्र–1 से स्पष्ट है ग्रे जंगल फाउल का वितरण दक्षिण एवं दक्षिण–मध्य राजस्थान में राजसमंद, उदयपुर, पाली, सिरोही, अजमेर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा एवं डूंगरपुर जिलों के सघन वन क्षेत्रों में था। आकार में अरावली रेड स्पर फाउल व पेन्टेड स्पर फाउल दोनों से बडा यह मुर्गा सघन वन, बाँस जंगल व झाडियों में भी देखा जा सकता है। दिन में यह भूमि पर भोजन तलाश करता हुआ दिखाई देता है। एक प्रौढ नर व कई मादाओं की टोली का एक परिवार साथ रहता है। रात्रि में ये भूमि पर नहीं बैठते बल्कि वृक्षों के झुरमुट में किसी वृक्ष की टहनी पर पास–पास सट कर बैठते हैं। यह मुर्गा जल स्रोत पर उड़कर नहीं बल्कि चल कर पहुँचता है। कई बार भले ही यह मुर्गा हमें दिखाई न पड़े परन्तु वनस्पतियों के झुरमुटों से आती उनकी तेज आवाज बरबस ही आगंतुक का ध्यान आकर्षित करती है। जंगल में नर मुर्गे की कई तरह की आवाजें सुनने को मिलती हैं जैसे ककरेटोहो–ककरेटोहो, कूऊSSS– कूऊSSS केहकक, का–को–का, ठकरे डहाका आदि।

वर्ष 1960 तक यह मुर्गा दक्षिण व दक्षिण–मध्य राजस्थान में दूर तक फैला था। लेकिन अब इनकी संख्या व वितरण सीमा में गिरावट जारी है। मानवीय अतिक्रमण, शिकार, आवास क्षति, पानी की कमी आदि ने इस मुर्गे को यथेष्ट नुकसान पहुँचाया है। शिकारी इसका शिकार प्रायः पानी के स्रोत पर करते हैं। जंगल से चोरी किये इसके अण्डे भी आदिवासी उठा लेते हैं एवं घरेलू मुर्गियों से ऊष्मायन करवा चूजे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। बुजुर्ग आदिवासी बताते हैं कि घर की मुर्गियों की मदद से इस तरह निकाले इनके चूजे ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रहते। जंगलों में उगने वाले जंगली करौंदा व अन्य झाडियों को काट–काट कर आदिवासी व अन्य लोगों ने खेतों की बाड में काम में ले लिया। करौंदा झाडियों के नीचे इन मुर्गों के सुरक्षित आवास थे, जो समाप्तप्राय हो गये। वर्तमान में यह मुर्गा राजस्थान में अनेकों वनक्षेत्रों के अलावा 5 अभयारण्यों माउन्ट आबू, फुलवारी की नाल, कुंभलगढ़, टॉडगढ–रावली एवं सीतामाता में सबसे अधिक पाया जाता है। दक्षिण में इसकी वितरण सीमा बाँसवाड़ा व डूंगरपुर से होकर गुजरात राज्य के साबरकांठा व बनासकांठा जिलों एवं मध्यप्रदेश के वन क्षेत्र से जुड़ी है। उत्तर दिशा में वर्तमान में इसका वितरण टॉडगढ़–रावली अभयारण्य में देविया नाका अर्न्तगत आने वाले बाघमाल वन खण्ड तथा कामलीघाट व गौरमघाट वन क्षेत्रों तक है। इससे आगे अजमेर जिले के टॉडगढ़ एवं जस्साखेड़ा के पहाड़ी वनों में यह प्रजाति कभी उपस्थित हुआ करती थी लेकिन अब अनुपस्थित है। पश्चिम दिशा में यह प्रजाति सिरोही जिले के माउन्ट आबू, रेवदर, नीमाज एवं रव्वा बड़वज तक फैली थी लेकिन अब माउन्ट आबू तक ही होने के स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध है। पूर्व दिशा में इस प्रजाति का वितरण चितौड़गढ़, उदयपुर एवं प्रतापगढ़ जिलों के संगम पर स्थित सीतामाता अभयारण्य तक है। राजस्थान राज्य में पूर्व दिशा में यह अभयारण्य इसकी वर्तमान अंतिम वितरण सीमा बनाता है। पूर्व दिशा में और आगे बढ़ने पर यह प्रजाति बस्सी एवं भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य सहित कहीं भी वर्तमान में वितरण में नहीं है। बस्सी ठिकाने के ठाकुर श्री विजयसिंह राव कहते हैं कि कभी बस्सी वन क्षेत्र में भी ग्रे जंगल फाउल था लेकिन 1970 से आस–पास यह प्रजाति यहाँ से समाप्त हो गई।

सन् 1960 तक यह प्रजाति उदयपुर शहर के एकदम पास तक वितरण में थी। कलेर वन खण्ड के चूनाबेरी स्थल पर तो 1990 तक भी यह प्रजाति थी, लेकिन अब नहीं है। दक्षिणी राजस्थान में 1960 से 1970 के मध्य यह प्रजाति मोरवानिया, उभेश्वर, दडीसा, कोडियात, डोडावली, कर्नावली, अगदा वन खण्ड, जामुनिया की नाल, धरियावद आदि स्थानों से समाप्त हो गई। बाँसवाडा एवं डूंगरपूर के वन क्षेत्रों से भी 1960 से 1970 के मध्य ही प्रजाति निर्णायक रूप से समाप्त हुई (डॉ. रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2005) । इस प्रजाति को बचाने–फैलाने हेतु महाराणा भोपाल सिंह ने वन क्षेत्र से मुर्गे पकड़वाकर उदयपुर शहर में हरिदास जी की मगरी एवं जयसमंद वन क्षेत्र मे मुक्त कराये थे, लेकिन यह प्रजाति वहाँ टिकी नहीं तथा स्थापित भी नहीं हो पाई (डॉ. रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2005)।
अग्रवाल (1987) ने सीकर के गजेटियर में लिखा है कि वहाँ ग्रे जंगल फाउल था लेकिन वर्तमान में यह प्रजाति वहाँ कहीं भी विद्यमान नहीं है। अग्रवाल (1979) ने उदयपुर के गजेटियर में उदयपुर में रैड जंगल फाउल एवं ग्रे जंगल फाउल दोनों की उपस्थिति अंकित की है। उदयपुर में स्थित प्राचीन आहड सभ्यता की खुदाई में मिले अवशेषों की पहचान में पाया गया है कि कोई 4000 वर्ष पूर्व आहड (आयड) सभ्यता में जंगली मुर्ग की उपस्थिति थी। यह सूचना खुदाई में मिली हड्डी की पहचान व अन्य तथ्यों पर आधारित है। संभावना है उस समय रैड जंगल फाउल मेवाड़ भूभाग

में उपस्थित रहा हो लेकिन आज यह प्रजाति राजस्थान में जीवित अवस्था में किसी भी वन्य आवास में विद्यमान नहीं है (तहसीन, 2004)।

अरावली रैड स्पर फाउल का वितरण– राजस्थान में इस प्रजाति की वितरण संबंधी सूचना सारणी–3 में अंकित है।

सारिणी–3: अरावली रैड स्पर फाउल का राजस्थान में वितरण

क्र.सं.	जिला	उपस्थिति स्थल	वर्तमान में उपस्थिति	सन्दर्भ
1.	उदयपुर	क्यारी वन क्षेत्र, झाडोल का भोमट क्षेत्र, सज्जनगढ़ अभयारण्य, अक्यावड, उखलियात, धाटानाडी, खोखरिया की नाल, फुलवारी अभयारण्य, लादन, रामकुण्डा, तिनसारा, सान्डोल की नाल (नाल सान्डोल), झमेरी वन क्षेत्र, कोडियात, कलेर, उभेश्वर (उबेश्वर), कमलनाथ, बांकी	उपस्थित	तहसीन (1986), शर्मा (2007), श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), निजी प्रेक्षण
		जामुनिया की नाल, जयसंमद, केवडा की नाल, बांकी, चीरवाघाटा, देबारी	1960 तक उपस्थित वर्तमान में अनुपस्थित	श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007)
2.	राजसमंद, उदयपुर, पाली	कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य	उपस्थित	शर्मा (2007)
3.	पाली, राजसमंद, अजमेर	टॉडगढ़–रावली अभयारण्य (कालीघाटी, भीलबेरी क्षेत्र में काफी दिखता है)	उपस्थित	शर्मा (2007), निजी प्रक्षेपण
4.	डूंगरपुर	बीछीवाड़ा एवं अन्य वन क्षेत्र	1960 तक उपस्थित, अब अनुपस्थित	महारावल समर सिंह (निजी वार्तालाप 2005), महारावल हर्षवर्धन सिंह (निजी वार्तालाप 2005)
5.	बाँसवाड़ा	बाँसवाडा जिले के वन क्षेत्र	उपस्थित	ओझा (1998)
6.	उदयपुर, प्रतापगढ़, चितौडगढ़	सीतामाता अभयारण्य	उपस्थित	श्री रजा तहसीन (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007), अनाम (2010)
7.	सिरोही	माउन्ट आबू,	उपस्थित	शर्मा (2007)
		मोरस वन क्षेत्र	उपस्थित	निजी प्रक्षेपण
		नीमज, रेवदर,रव्वा बडवज	उपस्थित	श्री रजा तहसीन, (निजी वार्तालाप 2005), शर्मा (2007)
8.	राजसमंद	कटार, बरवाड़ा	उपस्थित	शर्मा (2007)
9.	जालौर	सुन्दामाता कन्जर्वेशन रिजर्व (जसवंतपुरा रेंज)	उपस्थित	श्री पर्वतसिंह चम्पावत, क्षेत्रीय वन अधिकारी (निजी वार्तालाप 2017)

अरावली रैड स्पर फाउल एक छोटा मुर्गा है जो ग्रे जंगल फाउल के साथ राजस्थान में सिम्पैट्रिक वितरण में है यानी दोनों एक ही प्रकार के आवास व वितरण क्षेत्र को साझा करते हैं। अरावली रैड स्पर फाउल अपेक्षाकृत कम घने जंगल में भी रह लेता है तथा जहाँ ग्रे जंगल फाउल समाप्त हो गया, यह प्रजाति अभी भी वहाँ अपने आप को बचा पाने में सफल रही है। इसकी वितरण सीमा ग्रे जंगल फाउल से तनिक बड़ी है। यह मुर्गा भी छोटी टोलियों में रहता है। पहाड़ी नालों में जब काफी अन्दरूनी क्षेत्रों में भ्रमण पर जाते हैं तो यह मुर्गा छोटी टोलियों में भूमि पर इधर–उधर छुपने हेतु दौड़ता नजर आता है। जंगल में इसकी ठकरक–ठकरक या टटरक–टटरक जैसी आवाजें सूदूर वनस्पतियों के झुरमुटों से आती सुनाई पड़ती हैं। यह मुर्गा दक्षिणी तथा दक्षिण–मध्य राजस्थान के पहाड़ी वनों में पाया जाता है(चित्र–2)। यह अजमेर, राजसमंद, उदयपुर, पाली, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, सिरोही एवं जालौर जिलों में वितरित ज्ञात है। संरक्षित क्षेत्रों में यह 6 अभयारण्यों टॉडगढ़–रावली, कुंभलगढ, सज्जनगढ, फुलवारी की नाल, माउन्ट आबू एवं

सीतामाता से ज्ञात है। पश्चिम में इसकी वितरण सीमा सिरोही एवं जालौर जिलों की सीमा पर स्थित सुन्दामाता कन्जर्वेशन रिजर्व तक गई है। दक्षिण में गुजरात एवं मध्यप्रदेश से वितरण सीमा निरंतरता में हैं। उत्तर में इनका वितरण टॉडगढ़–रावली तक तथा पूर्व दिशा में सीतामाता अभयारण्य तक है। सीतामाता अभयारण्य में पश्चिम छोर पर आरामपुरा नाका, व आम्बारेटी के आस–पास कम संख्या में दिखाई देता है। अभयारण्य के पूर्वी छोर पर जाखम बाँध की तरफ जहाँ खोह पाये जाते हैं, यह प्रजाति नहीं दिखती है, बल्कि वहाँ पेन्टेड स्पर फाउल नजर आने लगता है (श्री देवेन्द्र मिस्त्री, निजी वार्तालाप, 2016)।

पेन्टेड स्पर फाउल का वितरण– यह मुर्गा अरावली रैड स्पर फाउल की तुलना में कुछ अधिक शुष्कता वाला आवास पसंद करता है। राजस्थान में इस प्रजाति की वितरण संबंधी सूचना सारणी–4 में अंकित है।

सारिणी–4: राजस्थान में पेन्टेड स्पर फाउल का वितरण

क्र.सं.	जिला	उपस्थिति स्थल	वर्तमान में उपस्थिति	सन्दर्भ
1.	अलवर	सरिस्का बाघ परियोजना क्षेत्र	उपस्थित	शंकर एवं साथी(1993), शंकर(1993), शर्मा(1996), रेड्डी(1994)
		सीरास वन क्षेत्र	उपस्थित	स्व. श्री डी.पी. गोविल(निजी वार्तालाप, 1992)
2.	जयपुर	जमवारामगढ अभयारण्य	उपस्थित	शर्मा (1996), व्यास(2000), रणजीत सिंह(1999)
3.	भरतपुर	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान,	उपस्थित	शर्मा (1996)
		बंध बारेठा	उपस्थित	डॉ. विभू प्रकाश(निजी वार्तालाप 2000)
4.	सवाई माधोपुर	रणथम्भोर बाघ परियोजना	उपस्थित	शर्मा(1996), रणजीत सिंह(1999), व्यास(2000)
5.	करौली	कैलादेवी अभयारण्य	उपस्थित	शर्मा (1996), रणजीत सिंह (1999)
6.	बूँदी	रामगढ़ विषधारी अभयारण्य	उपस्थित	शर्मा (1996), रणजीत सिंह (1999), व्यास (2000)
7.	झालावाड़	आमझर माता जी के समीप बाघेर वन क्षेत्र स्थित खोह	उपस्थित	डॉ. पी.एस. चौहान (निजी वार्तालाप, 2016)
8.	कोटा	जवाहर सागर बाँध से कोटा बैराज के बीच चम्बल नदी के दोनों किनारे, दर्रा अभयारण्य, जवाहर सागर अभयारण्य (शान्ती आश्रम प्याऊ पर पानी पीने आते हैं)	उपस्थित	व्यास(2000), श्री भगवान सिंह राठौड़ एवं श्री फतह सिंह राठौर, सहायक वन संरक्षकगण (निजी वार्तालाप 2012)
9.	बाराँ	शाहाबाद घाटी, कुण्डा खोह, तेलनी खोह	उपस्थित	स्वयं प्रक्षेपण(2015)
10.	चित्तौड़गढ़	बस्सी वन्यजीव अभयारण्य, नीलीया महादेव, भैंसरोड़गढ वन्यजीव अभयारण्य	उपस्थित	श्री विजय सिंह राव(निजी वार्तालाप 2014), श्री ऋृषिराज सिंह देवल, निजी वार्तालाप 2012), श्री मनोज पाराशर उप वन संरक्षक(निजी वार्तालाप, 2009)
11.	भीलवाड़ा	थेला खोह, केकड़िया खोह	उपस्थित	डॉ0 अश्विनी कुमार, व्याख्याता, प्राणि शास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा(निजी वार्तालाप, 2015)
12.	प्रतापगढ़, उदयपुर, चित्तौड़गढ़	सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य के जाखम डेम क्षेत्र में पाया जाता है। कभी–कभी वाल्मिकी आश्रम क्षेत्र में भी पक्षी दिखाई देता है।	उपस्थित	श्री देवेन्द्र मिस्त्री(निजी वार्तालाप, 2016)
13.	धौलपुर	वन विहार अभयारण्य	उपस्थित	डॉ0 धर्मेन्द्र खाण्डल(निजी वार्तालाप, 2016)

पेन्टेड स्पर फाउल पूर्ववर्ती दोनों मुर्गो से अलग–थलग, अपेक्षाकृत अधिक शुष्कता वाली बड़ी वितरण सीमा में विंध्याचल पर्वतमाला एवं उत्तरी अरावली तक फैला है। यह पहाड़ी प्रदेश के वन खोह, खोह तट (जिन्हें आम भाषा में ''कराई'' कहते हैं) एवं पथरीले क्षेत्र पसंद करता है। यह छोटा मुर्गा अलवर, जयपुर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, करोली, बूँदी, कोटा, बाँरा, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, धौलपुर एवं उदयपुर जिलों के वनों में पाया जाता है(चित्र–3)। उत्तर दिशा में अलवर जिले में सरिस्का व सीरास वन क्षेत्र, पूर्व में सवाई माधोपुर, करोली, भरतपुर एवं धौलपुर एवं दक्षिण–पूर्व में हड़ौती के चारों जिलों कोटा, बूँदी, झालावाड़ एवं बाँरा में यह प्रजाति विद्यमान है। पश्चिम दिशा में यह भीलवाड़ा (पश्चिमी भाग) व चित्तौड़गढ़ तक फैला है। अरावली रैड स्पर फाउल एवं पेन्टेड स्पर फाउल की वितरण सीमा चित्तौड़गढ़ जिले में सीतामाता अभयारण्य में मिलती है। पेन्टेड स्पर फाउल बहुत सुन्दर मुर्गा है। इसे रणथम्भौर एवं सरिस्का बाघ परियोजना क्षेत्र में आसानी से जल स्रोतों के पास या पथरीले नालों के किनारे देखा जा सकता है। बाँरा जिले के खोहों में भी इस प्रजाति को आसानी से देखा जा सकता है।

5. **संरक्षण समस्यायें एवं समाधान**– तीनों जंगली मुर्गों की समस्यायें समान है। जल स्रोतों पर शिकार, पानी के स्रोतों की कमी, आवास बर्बादी, जंगल के मध्य में बसे गाँवों के लोगों द्वारा अण्डे उठा लेने की प्रवृत्ति आदि इन मुर्गों के समक्ष अस्तित्व का संकट खड़ा करते हैं। जंगल की आग भी इन पक्षियों के चूजों व अण्डों को नुकसान पहुँचा सकती है। जंगली करौंदा को काट–काट कर खेतों की बाड़ करने की प्रवृत्ति ने मुर्गों के आवास को बहुत नुकसान पहुचाया है। जन जागरण, प्रभावी गश्त, प्राकृतिक जल स्त्रोतों में पानी की कमी होने पर कृत्रिम जल स्रोत सृजन, आवास सुरक्षा एवं अग्नि नियंत्रण मुर्गों के संरक्षण में मददगार साबित हो सकते हैं। हालाँकि *लेन्टाना कमारा* एवं *प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा* जैसी विदेशी वनस्पति प्रजातियां वनों में विनाशक भूमिका निभाती हैं लेकिन कई जगह जंगली मुर्गे इनके नीचे आश्रय भी लेते हैं। अतः खरपतवार नियंत्रण चरणों में किया जाये न कि एक बार ही पूर्ण सफाई कर जंगल को खुला कर दिया जाये। किसानों में जागरूकता लाकर करौंदों की झाड़ियों को काटकर उनकी खेत की बाड़ करने से रोकने का प्रयास किया जाना चाहिये। अच्छा रहे कि किसानों को करौंदे, थूर एवं रतनजोत की जीवित बाड़ लगाने हेतु प्रेरित किया जाये ताकि वे करौंदा संरक्षण में सकारात्मक भागीदारी निभा सकें। लघु खाद्यान प्रदान करने वाली घासों के बीजों को उपयुक्त स्थानों पर वन क्षेत्रों में बुवाई करने से मुर्गों, तीतरों, बटेरों व अन्य पक्षियों हेतु भोजन आपूर्ति बढाई जा सकती है। मुर्गे कीड़े–मकोड़े भी खाना पंसद करते हैं। वर्षा में मुर्गों के आवास में जगह–जगह ताजा गोबर डलवाया जाये ताकि गुब्रेलों व दीमकों की संख्या बढ़े। फायर लाइनों की सफाई गर्मी के मौसम के प्रांरभ होने से पूर्व करा लेनी चाहिये साथ ही मार्च से जून तक अग्नि निगरानी कार्य प्रभावी तरीके से किया जाना चाहिये।

6. **परिस्थितिकी पर्यटन**– मुर्ग अवलोकन को परिस्थितिकी पर्यटन से जोड़ा जा सकता है। बाजरा, ज्वार एवं लघु खाद्यान्नों के दाने किसी जल स्रोत के पास नियमित डाल कर मुर्गों को आकर्षित किया जा सकता है। उचित दूरी(लगभग 50 मी0) पर छिपने का स्थान बना कर मुर्ग अवलोकन व छायांकन हेतु पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। वन विभाग राजस्थान ने ऐसे प्रयास सीतामाता अभयारण्य में आरामपुरा नाके एवं कुंभलगढ़ अभयारण्य में छोटी हौदी पर ऐसे प्रयोग किये थे जिनके सकारात्मक नतीजे प्राप्त हुये। माउन्ट आबू में अग्नेश्वर महादेव के महंत ने कुछ चुग्गा डालना प्रारंभ किया तो मंदिर परिसर में ही मुर्गे आने लगे। कर्नाटक जिले के बल्लारी जिले में दरोजी स्लॉथ बीयर अभयारण्य में भी लेखक ने एक पर्यटक स्थल पर ऐसा दृष्य देखा। परन्तु यह ध्यान देने की जरूरत है कि मुर्गे आकर्षित होने के स्थान पर पालतु कुत्ते व पालतू बिल्ली कदापि नहीं हों। दर्शकों द्वारा लाया खाना भी पक्षियों को न दिया जाये।

7. **निष्कर्ष**– प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि राजस्थान में वर्तमान में चार प्रजाति के जंगली मुर्गे विद्यमान हैं जिनमें मोर(*Pavo cristatus*), जंगली मुर्गा(*Gallus sonneratii*), झापटा(*Galloperdix spadicea caurina*) तथा जंगली मुर्गी(*Galloperdix lunulata*) है। मोर लगभग संपूर्ण प्रदेश में जंगलों से लेकर कृषि क्षेत्र व आबादी क्षेत्रों में वितरित है। जंगली मुर्गा व झापटा अरावली पर्वतमाला में दक्षिण एवं दक्षिण–मध्य अरावली में वनों में सहचर रूप से समान आवास में वितरण में हैं। जंगली मुर्गे की तुलना में झापटा का फैलाव अधिक विस्तृत है। छोटे मुर्गे का वितरण संपूर्ण विंध्याचल पर्वतमाला एवं उत्तर–पूर्व में जयपुर एवं अलवर जिले में अरावली पर्वतमाला के वनों तक हुआ है। तीनों मुर्गों के समक्ष आवास विनाश, अल्प भोजन उपलब्धता पेय जल संकट व शिकार के कारण अस्तित्व को खतरा है लेकिन आवास सुधार, पेय जल व्यवस्था एवं जनजागरण से इनको बचाया जा सकता है। संरक्षित क्षेत्रों में सुरक्षा, भोजन एवं पेय जल व्यवस्था फिर भी अच्छी है लेकिन सामान्य वन क्षेत्रों में सुरक्षा एवं पेय जल व्यवस्था में सुधार अपेक्षित है। मुर्ग प्रजातियों को पारिस्थितिकी पर्यटन से जोड़कर रोजगार के अवसर बढाये जा सकते हैं एवं राजस्व भी अर्जित किया जा सकता है।

आभार– लेखक वन विभाग राजस्थान व कर्नाटक के वन अधिकारियों व कर्मचारियों का बहुत आभारी है जिन्होंने अध्ययन में सहयोग प्रदान किया। लेखक टैलन क्लब, उदयपुर के प्रकृति प्रेमियों का भी आभारी है जिन्होंने अपने प्रेक्षण साझा किये। लेखक महारावल श्री हर्षवर्धन सिंह, महारावल श्री समर सिंह, ठाकुर विजय सिंह राव, डॉ. रजा तहसीन, मेजर दुर्गादास, श्री मनोज पारासर, श्री पी.सी. जैन, डॉ. धमेन्द्र खाण्डल, श्री प्रदीप सुखवाल, श्री शरद अग्रवाल, विनय दवे, श्री ऋषि राज सिंह देवल एवं श्री देवेन्द्र मिस्त्री का बहुत आभारी है जिन्होंने अपने अनुभव एवं विश्वसनीय प्रमाण स्वरूप फोटोग्राफ उपलब्ध कराये।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, बी0 डी0(1978) गजेटियर ऑफ इन्डिया, राजस्थान, सीकर ।

2. अग्रवाल, बी0 डी0(1979) गजेटियर ऑफ इन्डिया, राजस्थान, उदयपुर।

3. अनाम(2010) असेसमेन्ट ऑफ बायोडाईवर्सिटी इन सीतामाता वाइल्ड लाईफ सैंक्चुरीः एक कन्जर्वेशन पर्सपैक्टिव, फाउंडेशन फॉर ईकोलोजिकल सिक्युरीटी आंनद।

4. अली, एस0 एवं रिप्ले, एस0 डी0(1983) हैण्ड बुक ऑफ द बर्ड्स ऑफ इन्डिया एण्ड पाकिस्तान(कॉम्पेक्ट एडीशन)।

5. ओझा, जी0 एच0(1998) बाँसवाड़ राज्य का इतिहास(प्रथम 1936 में प्रकाशित), प्रिन्ट 1998, राजस्थान ग्रन्थालय, जोधपुर।

6. कुमार, एस0(1996) रेकार्ड ऑफ द पेन्टेड स्पर फाउल *गैलोपर्डिक्स लुनुलेटा*(वेलेन्सीनेस) इन रामगढ़ सैंक्चुरी ऑफ डिस्ट्रिक बूंदी, राजस्थान, जे.बी.एन.एच.एस., खण्ड–93, अंक–1, मु0 पृ0 89–90।

7. रणजीत सिंह, एम0 के0(1999) द पेन्टेड स्पर फाउल *गैलोपर्डिक्स लुनुलेटा* (वेलेन्सीनेस) इन रणथम्भौर नेशनल पार्क, राजस्थान, जे.बी.एन.एच.एस., खण्ड–96, अंक–2, पृ0 314।

8. रेड्डी, जी0 वी0(1994) पेन्टेड स्पर फाउल इन सरिस्का, न्यूजलेटर फॉर बर्ड वाचर्स ऑफ इन्डिया, खण्ड–34, अंक–2, पृ0 38।

9. सहगल, के0 के0(1970) गजेटियर ऑफ चित्तौड़गढ़, राजपत्र निदेशालय, राजस्थान सरकार।

10. सिंह, के0 आर0, एवं सिंह के0 एस0(1995) फीजेन्ट ऑफ इण्डिया एण्ड देअर एवीकल्चर, भारतीय वन्यजीव संस्थान, मु0पृ0 1–176।

11. शंकर, के0(1993) पेन्टेड स्परफाउल *गैलोपर्डिक्स लुनुलेटा* (वैलेन्सीनेस) इन सरिस्का टाइगर रिजर्व, राजस्थान। जे.बी. एन.एच.एस., खण्ड–90, अंक–2, पृ0 289।

12. शंकर, के0; मोहन डी0 एवं पान्डे, एस0(1993) बर्ड्स ऑफ सरिस्का टाइगर रिजर्व, राजस्थान, इंडिया। फोर्कटेल, खण्ड–8, मु0पृ0 133–141।

13. शर्मा, ए0 के0(1996) पेन्टेड स्पर फाउल *गैलेपर्डिक्स लुनुलेटा* (वैलेन्सीनेस) इन राजस्थान। जे.बी.एन.एच.एस., खण्ड–93, अंक–1, पृ0 90।

14. शर्मा, एस0 के0(1998) लोक प्राणी विज्ञान, हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर एवं दिल्ली।

15. शर्मा, एस0 के0(2007) स्टडी ऑफ बायोडायवर्सिटी एण्ड एथनोबायोलॉजी ऑफ फुलवारी वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी, उदयपुर (राजस्थान)। पी–एच. डी. थीसिस। वनस्पति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर। मु0पृ0 1–660।

16. तहसीन, आर0 एच0(1986) रैड स्पर फाउल (*गैलोपर्डिक्स स्पेडिसिया कौरीना*), जे.बी.एन.एच.एस., खण्ड–83, अंक–3, पृ0 663।

17. तहसीन, आर0 एच0(1988) इन्डूसिव स्लीप इन बड्र्स, जे.बी.एन.एच.एस., खण्ड–85, अंक–1, मु0पृ0 435–436।

18. तहसीन, आर0 एच0(2004) फौना ऑफ मेवाड़, फ्रॅाम कॉपर ऐज टू आयरन ऐज, चीतल, खण्ड–42, अंक–1–2, मु0पृ0 35–38।

19. तहसीन, आर0 एवं तहसीन, एफ0(1990) जंगल कैट फैलिस चाउस एण्ड ग्रे जगल फाउल *गैलस सोनेरेटाई* । जे.बी. एन.एच.एस., खण्ड–87, अंक–1, पृ0 144।

20. व्यास, आर0(2000) डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ पेन्टेड स्परफाउल *गैलोपर्डिक्स लुनुलेटा* इन राजस्थान, मोर, फरवरी, खण्ड–2, पृ0 2।

ग्रे जंगल फाउल (फोटो शरद अग्रवाल)

झापटा (फोटो शरद अग्रवाल)

वन मुर्गी (फोटो प्रदीप सुखवाल)

फोटो प्लेट 1

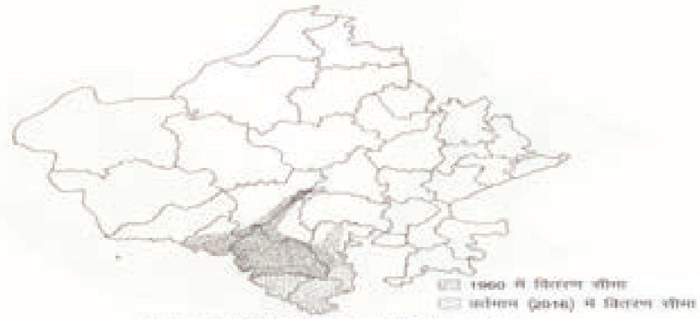

चित्र 1 : ग्रे जंगल फाउल का राजस्थान में वितरण

चित्र 2 :
अरावली रेड स्पर फाउल का
राजस्थान में वितरण

चित्र 3 :
पेन्टेड स्पर फाउल का
राजस्थान में वितरण